

पुरुषमेध... मिथकों के भीतर गूँजता वर्तमान

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार: एसआरएमएस रिद्धिमा में रविवार की शाम दूधनाथ सिंह के लिखे नाटक पुरुषमेध के नाम रही। नाटक दर्शकों को सोचने के लिए विवश करता है कि परंपरा कब जीवन का आधार बनती है और कब वही परंपरा सत्ता के संरक्षण का उपकरण बन जाती है। नाटक में मिथकीय पात्रों और घटनाओं के माध्यम से समकालीन सामाजिक चेतना के देरों सवाल को जीवंत किया गया। पुरुषमेध एक ऐसा नाटक बन जाता है, जिसमें मिथक के भीतर से वर्तमान की आवाज सुनाई देती है।

नाटक का पौराणिक आख्यान महज अतीत की कथा बनकर नहीं रहता, बल्कि उसके माध्यम से सत्ता, धर्म, सामाजिक व्यवस्था, स्वतंत्रता और मनुष्य के अस्तित्व से जुड़े गंभीर सवाल सामने आते हैं। नाटक की कहानी युवराज पुरुरवा के राज्याभिषेक की तैयारी से शुरू होती है। पुरुरवा परंपरागत राजसत्ता और उन धार्मिक कर्मकाण्डों को स्वीकार करने से इनकार कर देता है, जिनमें उसे शोषण और रक्तपात की छाया दिखाई देती है। नाटक का निर्देशन अंबुज कुकरेती और दिनायक कुमार श्रीवास्तव ने किया है। पुरुरवा का किरदार



पुरुषमेध नाटक का मंचन करते कलाकार।



नाटक का भावपूर्ण दृश्य।

• एसआरएमएस रिद्धिमा में दूधनाथ सिंह के लिखे नाटक का मंचन

पंकज कुकरेती ने निभाया। इसके अलावा संजय सिंह, चंपा उपाध्याय, सोनालिका सक्सेना, सोहम तिवाड़ी, इल्हाम, विनायक श्रीवास्तव, शत्रुघ्न शर्मा, निशांत कुमार, दुर्गेश, कमल शर्मा, गौरव कर्की ने अपनी-अपनी भूमिकाओं में बेहतरीन अभिनय किया। कोरियोग्राफर की जिम्मेदारी तनाया भट्टाचार्य ने निभाई। साउंड संचालन अरुण सैनी और जाफर एवं प्रकाश संचालन जसवंत सिंह ने किया। इस दौरान एसआरएमएस ट्रस्ट संस्थापक एवं चेयरमैन देव मूर्ति, आशा मूर्ति, आदित्य मूर्ति, ऋद्धा मूर्ति, उषा गुप्ता, गुरु मेहरात्रा, डा. प्रभाकर गुप्ता, डा. अनुज कुमार, डा. शैलेश सक्सेना, डा. रीता शर्मा मौजूद रहे।

• अमृत विचार